दैनिक

राष्ट्रीय प्रस्तावना

गाँव से गवर्नेन्स तक

स्मारिका -2016

राष्ट्रीय प्रस्तावना
गाँव से गवर्नेन्स तक
मैं पीएम पद की दौड़ में शामिल नहीं : मुलायम
निर्विरोध निर्वाचित हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डा. बाजपेई
2014 में चिदंबरम होंगे पीएम पद के प्रबल दावेदार
कटेरिया के खिलाफ दर्ज मामले वापस
सिंहस्थ कुंभ में आंधी बारिश से छह की मौत
दिल में अपनी खिलेश यादव
बेहतर पुलिसिंग के लिए डीजीपी ने ली क्लास
साइकिल में हैं बहुत सारे गुण: मुख्यमंत्री
अखिलेश के मंत्रिमण्डल का हुआ विस्तार
दो नये कैबिनेट तथा 10 राज्यमंत्री शामिल, 8 राज्यमंत्रियों का कद बढ़ा
अब समाजवादी श्रवण यात्री
रूपति-रामेश्वरम के करें दर्शन
26 नवम्बर से 4 दिसम्बर, 2015
बरेली और मुरादाबाद के बीच हुआ टैल्गो ट्रेन का परीक्षण
40 दिनों तक 180 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार
चिप बताएगी पौधों की डेली सेहत
लखनऊ के गोमती रिवर फ्रन्ट पर लगेंगे पेड़ों में चिप
पानी को प्रभावित स्थान तक ले जाने
नई दिल्ली में प्रधानमंत्री मोदी से चर्चा करते उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश
राजनाथ में मोदी को अहम जिम्मेदार
अंतरिक्ष से पृथ्वी पर वापस लौटीं सुनीता विलियम्स
अब तक सात बार कर चुकी हैं अंतरिक्ष में चहलकदमी

प्रधान कार्यालय : एफ 1/39 प्रथम तल करामत मार्केट निशातगंज, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

फोन नं. 0522-4064242, 9918735329, 8115838329

रुद्राक्ष व तुलसी की माला में 108 मनिकाओं का वैज्ञानिक महत्व

प्रोफेसर भरत राज सिंह

हम सभी जानते हैं कि भगवान शिव असीम ऊर्जा अथवा शक्ति के में आराध्य हैं और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को चला रहे हैं तथा इनकी पूजा का महत्व विभिन्न हिन्दू धर्म ग्रंथों में प्रकट किया गया है। इसी प्रकार ब्रम्हा को संसारिक जीवों की उत्पत्ति का और विष्णु को संसारिक क्रिया कलापों को चलाने का ध्योतक माना गया है।

यहां पर आज प्रोफेसर (डॉ0) भरत राज सिंह, निदेशक स्कूल ऑफमैनेजमेंट साइंसेज लखनऊ जो वैदिक विज्ञान केन्द्र के भी मुख्य संयोजक है से रुद्राक्ष की माला में 108 मनिकाओं तथा तुलसी की माला में भी 108 मनिकाओं के रखे जाने व उसके जाप के विषय में चर्चा की गयी।

रुद्राक्ष की माला में 108 मनिकाओं का महत्व

रुद्राक्ष अपनी विभिन्न गुणों के कारण व्यक्ति को दिया गया, 'प्रकृति का एक अमूल्य उपहार है'। ऐसी मान्यता है कि रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के नेत्रों से निकले जल बिन्दुओं से हुई है। जिसके फ्लस्वरूप रुद्राक्ष का महत्व जग प्रकाशित है। रुद्राक्ष को धारण करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं तथा इसको धारण करके की गई पूजा हरिद्वार, काशी, गंगा जैसे तीर्थस्थलों के समान फ्ल प्रदान करती है।

रुद्राक्ष की माला द्वारा मंत्र उच्चारण करने से फ्ल प्राप्ति की संभावना कई गुना बढ़ जाती है तथा इसे धारण करने वाले व्यक्ति को सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है। रुद्राक्ष की माला अष्टोत्तर शत अर्थात 108 रुद्राक्षों की या 54 रुद्राक्षों की होनी चाहिए अन्यथा सत्ताईस दाने की तो अवश्य हो। इस संख्या में इन रुद्राक्ष मनकों को पहनना विशेष फलदायी माना गया है। शिव भगवान का पूजन एवं मंत्र जाप रुद्राक्ष की माला से करना बहुत प्रभावी माना गया है तथा अलग-अलग रुद्राक्ष के दानों की माला से जाप या पूजन करने से विभिन्न इच्छाओं की पूर्ति होती है।

तुसली की माला में 108 मनिकाओं का महत्व

भारत में पुरातन काल से ही तुलसी की औषधीय गुणों को काफी महत्ता प्रदान की गयी है तथा

शारीरिक कष्टों के निवारण में तुलसी की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया गया है। इसे चन्द्रमॉ को प्रतीक माना गया है। आइए जानें तुलसी के पत्तियों के कुछ अवसधीय गुणों के बारें में, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद हैं तुलसी में शोध के उपरांत विभिन्न स्वास्थ्य लाभ के गुणों की पुष्टि होती हैं, जैसे- तुलसी की पत्तियां कफ साफकर खॉसी में लाभप्रद, त्वचा के रोगों को दूर करने काढ़ा पीने से सिरदर्द में राहत, इलाईची अदरक व तुलसी की पत्तियों के सेवन से दस्त उल्टी दूर होना, तुलसी की 8-10 पत्तियां रोजाना खाने से तनाव दूर होता

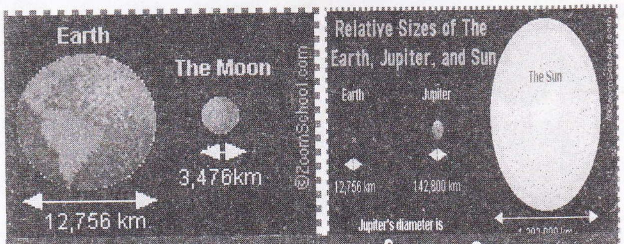

चन्द्रमा व पृथ्वी का व्यास सूर्य व पृथ्वी का व्यास

है, तुलसी के अर्क से ऑख की समस्या में लाभ, तुलसी के अर्क में कपूर मिलाकर कान में डालने से सूनने की समस्या दूर होना, तुलसी की पत्तियां खाने व काढ़ा पीने से दमा व सांस की तकलीफ दूर होना और रोजाना तुलसी की पत्तियां चबाने मुह का संक्रमण दूर होने का लाभ प्राप्त होता है।

यहां यह उल्लेख करना अति महत्वपूर्ण होगा की यदि तुलसी की पत्तियों में इतने गुण है, तो इसकी 108 मनिकाओं की माला को धारण कर पाठ करने से शारीरिक सभी कष्टों का निवारण अवश्य होगा तथा मनुष्य को स्वस्थ्य व निरोगी शरीर से अच्छे करने में लगाव बढ़ता है।

108 मनिकाओं का वैज्ञानिक कारण व महत्व

अब आईये 108 मनिकाओ के बारे में कुछ विशेष जानकारी हासिल करे। यह लेख 'वैदिक विज्ञान केन्द्र, स्कूल ऑफ मैनेजमेन्ट साइंसेज, लखनऊ का एक महत्वपूर्ण शोध है-

जब हम रुद्राक्ष की 108 मनिकाओ का जाप मंत्रों के साथ करते हैं तो हमारा उद्देश्य परम शक्ति भगवान शिव से जुड़ने की होती है। तो क्या हम 108 बार मंत्रो की उच्चारण से असीम शक्तिवान हमारे इष्ट देव सूर्य, जो शिव है, उन पक पहुॅच जोते है?

यही बात तुलसी की माला पर भी लागू होती है, जो 108 मनिकाओ की होती है, उसके 108 बार जाप से क्या हम चन्द्रमा तक पहुॅच जाते हैं? जी हॉ, चौकिये नहीं यह बात बिल्कुल सत्य है।

अब आईये इस अध्ययन को कुछ विज्ञान व गणित के तराजू पर तौले और यह देखे कि हम कैसे सूर्य व चन्द्रमा तक अपने को पहुचाते हैं और उनकी शक्तियों का विशेष लाभ उठाते हैं। इन गणनाओं से 108 मनिकाओ के महत्व तथा उक्त तथ्यों की पुष्टि दर्शाती है-

रुद्राक्ष की 108 मनिकाओ की माला का ही जाप क्यों?

अ). सूर्य का व्यास क्या है? यह है-13,92,684 कि0मी0

ब) यदि इसे 108 से गुणा करते हैं तो यह दूरी आती है 15,04,09,872 कि0मी0, (अर्थात 15 करोड़ 4

रुद्राक्ष की 108.मनिकावाली माला

लाख 9 हजार 8 सौ बहत्तर कि0मी0)। उपरोक्त दूरी पृथ्वी से सूर्य की है, जो आज तक के रिकार्ड के हिसाब से 14,96,00,000 कि0मी0 (14 करोड़ 96 लाख कि0मी0), के लगभग आकी गयी है।

स) इस प्रकार रुद्राक्ष की एक मनिका को सूर्य का व्यास मानते हुए, 108 बार मंत्रों के जाप से सूर्य शक्ति का प्रवाह शरीर में प्राप्त होने लगता है।

तुलसी की 108 मनिकाओं की माला का ही जाप क्यों?

अ). चन्द्रमा का व्यास क्या है? यह है-3,474 कि0मी0

ब). यदि इसे 108 से गुणा करते हें तो यह दूरी आती है 3,75,192 कि0मी0 (अर्थात 3 लाख 75 हजार 1

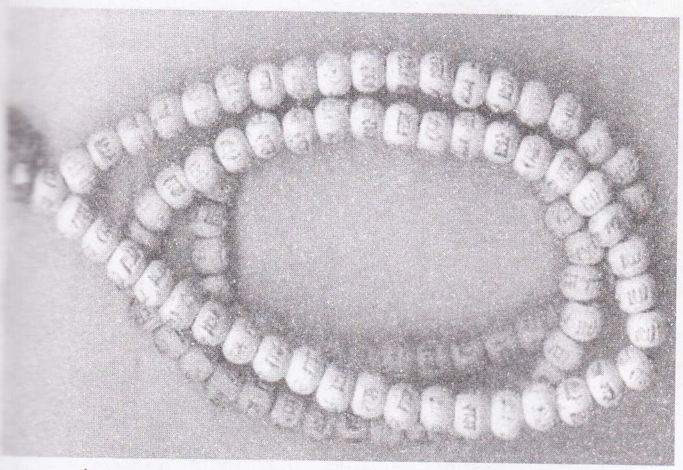

सौ बानवे)। उपरोक्त दूरी पृथ्वी से चन्द्रमा की है जो आज तक के रिकार्ड के हिसाब से 3, 70, 300 कि0मी0 (3 लाख 70 हजार 3 सौ कि0मी0) के लगभग आकी गयी है।

स). इस प्रकार तुलसी की मनिका को चन्द्रमा (का व्यास) मानते हुए, 108 बार मंत्रों के जाप से चन्द्र शक्ति प्राप्त हो जाती है और सभी दुखों का विनाश हो जाता है।

उपरोक्त तथ्यों से आप अचम्भित अवश्य हो रहे होंगे, परन्तु यह भारत की वैदिक विज्ञान की एक अनोखी पहल है, जिससे शारीरिक शक्ति को बढ़ाने में मंत्रों का अद्भुत उपयोग आदिकाल से होता रहा है। इस प्रकार जहां एक तरफ रुद्राक्ष की 108 मनिकाओं की माला के जप से एक अनोखी ऊर्जा शक्ति पैदा कर अच्छे कार्य के साथ-साथ आयु में वृद्धि होती है, वही दूसरे तरफतुलसी 108 मनिकाओ की माला के जप से चन्द्र शक्तिओं का लाभ उठाते हुए निरोग रहकर, लोगो को अच्छे कर्म से जोड़ कर संसारिक श्रृष्टि को चलाने का दायित्व का निर्वाहन होता है।

अब हम वैदिक समय के 108 अंको की महत्ता के कुछ अन्य तथ्यों को भी आप से सम्मुख रखना चाहूँगाः

अ). ब्रह्माण्ड में ग्रहों की संख्या 9 है तथा प्रत्येक गृह पर 12 राशियों का प्रभाव पड़ता है, इस प्रकार कुल संख्या 108 आती है।

ब). ब्रह्माण्ड में नक्छत्रों की संख्या 27 है तथा प्रत्येक नक्छत्रों के 4 चरण होते हैं, इस की भी कुल संख्या 108 आती है।

स). आकाश गंगा में कुल मुख्य तारों कि संख्या 108 होती है।

द). समुन्द्र मंथन के समय 54 देवता तथा 54 दानवों ने मंथन में भाग लिया था, इस प्रकार कुल संख्या 108 हुई।

इससे यह साबित होता है कि वैदिक काल में 108 संख्या का विशेष महत्व था। आईये भारत के गौरवशाली इतिहास को पुनर्जीवित करने हेतु 'वैदिक विज्ञान केन्द्र, लखनऊ' से जुड़कर वैदिक ज्ञान को लोगों में फैलाए तथा इनकी सत्यता की परख को दुनिया के लोगो के सामने रखकर, भारत की पौराणिक वैदिक धरोहर को वशुधैव कुटुम्बकम् से जोड़कार जीवन की सार्थकता को समर्पण भाव से जनमानस के लिए उपयोगी बनाये।